

॥ श्री तन्त्रकुलज्योतिषम् ॥



तन्त्रकुलम् · कुण्डली-मिलान · शुद्ध विवाह-मुहूर्त
दृक् · लाहिरी



दृक् · लाहिरी। वर-वधू जन्म से अष्टकूट। विवाह-स्थान सूची से चुनें — वहीं से पञ्चाङ्ग, त्रिबल, लग्न-शुद्धि और लत्ता निकलते हैं।



॥ सार · निष्कर्ष ॥

शुभ विवाह · मङ्गल कार्य



अष्टकूट

शुभ

२१/३६

कुण्डली-मिलान शुभ है।

माङ्गलिक

दोष नहीं

माङ्गलिक दोष वर-वधू किसी में नहीं।

विवाह इन्हीं तारीखों और समय पर करें।

१

७ मई २०२६, गुरुवार — शाम ०७:२६ से रात ०९:२६ बजे (वृश्चिक लग्न)।

ज्येष्ठ महीना है। वर और वधू दोनों अपने घर के सबसे बड़े हों तो यह दिन न लें। वर के सूर्य की लाल पूजा कर लें।

२

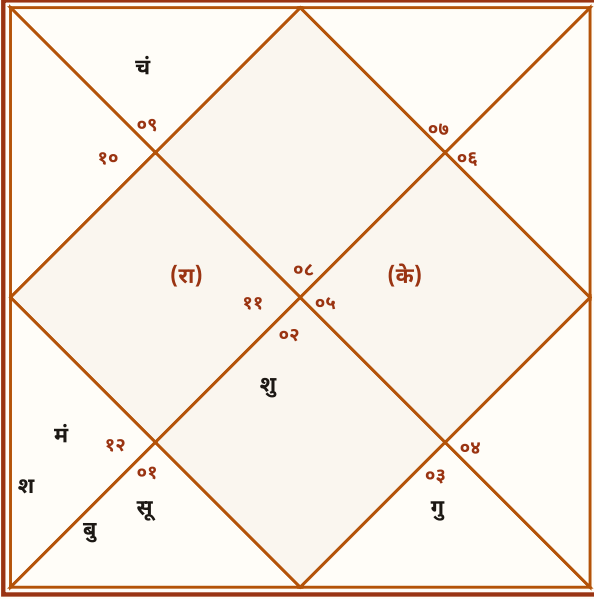
२९ मई २०२६, शुक्रवार — सुबह ०६:४४ से ०८:१४ बजे (मिथुन लग्न)।

ज्येष्ठ महीना है। वर और वधू दोनों अपने घर के सबसे बड़े हों तो यह दिन न लें।

॥ शुभं भवतु ॥

नीचे से शुभ समय चुनें — तभी लग्न-पत्रिका बनेगी।

विवाह-मुहूर्त कुण्डली · 2026-05-07 · गुरुवार · वृश्चिक लग्न · 19:26–21:26

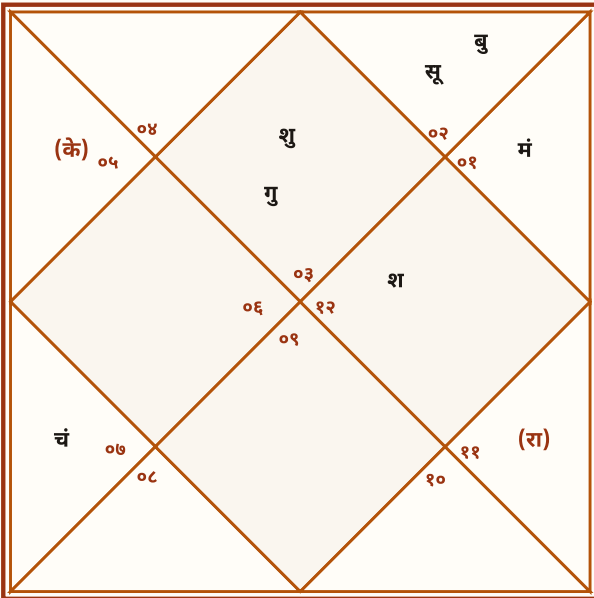


इस घड़ी कुण्डली इन दोषों से मुक्त है

- जामित्र नहीं — सप्तम पाप और १४वें नक्षत्र से मुक्त।
- भृगुषट्क नहीं — षष्ठ में शुक्र नहीं।
- कुजाष्टम नहीं — अष्टम में मङ्गल नहीं।
- पाप-कर्तरी नहीं — द्वितीय-द्वादश पाप-युग्म नहीं।
- अष्टम लग्न नहीं — जन्म-राशि/लग्न से आठवाँ नहीं।
- चन्द्र २ भाव — षष्ठ-अष्टम-द्वादश और पाप-युति से मुक्त।
- लत्ता नहीं — लग्न-नक्षत्र और वर-वधू जन्म-नक्षत्र लत्ता-मुक्त।
- स्थिर लग्न — विवाह के लिए ग्राह्य वर्ग।
- महापात नहीं — वैधृति-व्यतीपात स्थिति से मुक्त।

चुनकर पत्रिका बनाएँ

विवाह-मुहूर्त कुण्डली · 2026-05-29 · शुक्रवार · मिथुन लग्न · 06:44–08:14



इस घड़ी कुण्डली इन दोषों से मुक्त है

- जामित्र नहीं — सप्तम पाप और १४वें नक्षत्र से मुक्त।
- भृगुषट्क नहीं — षष्ठ में शुक्र नहीं।
- कुजाष्टम नहीं — अष्टम में मङ्गल नहीं।
- पाप-कर्तरी नहीं — द्वितीय-द्वादश पाप-युग्म नहीं।
- अष्टम लग्न नहीं — जन्म-राशि/लग्न से आठवाँ नहीं।
- चन्द्र ५ भाव — षष्ठ-अष्टम-द्वादश और पाप-युति से मुक्त।
- लत्ता नहीं — लग्न-नक्षत्र और वर-वधू जन्म-नक्षत्र लत्ता-मुक्त।
- द्विस्वभाव लग्न — विवाह के लिए ग्राह्य वर्ग।
- महापात नहीं — वैधृति-व्यतीपात स्थिति से मुक्त।

चुनकर पत्रिका बनाएँ

विवाह-लग्न-पत्रिका · ७ मई २०२६ · गुरुवार · वृश्चिक लग्न · 19:26–21:26



ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

॥ श्री तन्त्रकुलज्योतिषम् ॥

श्री गणेशाय नमः

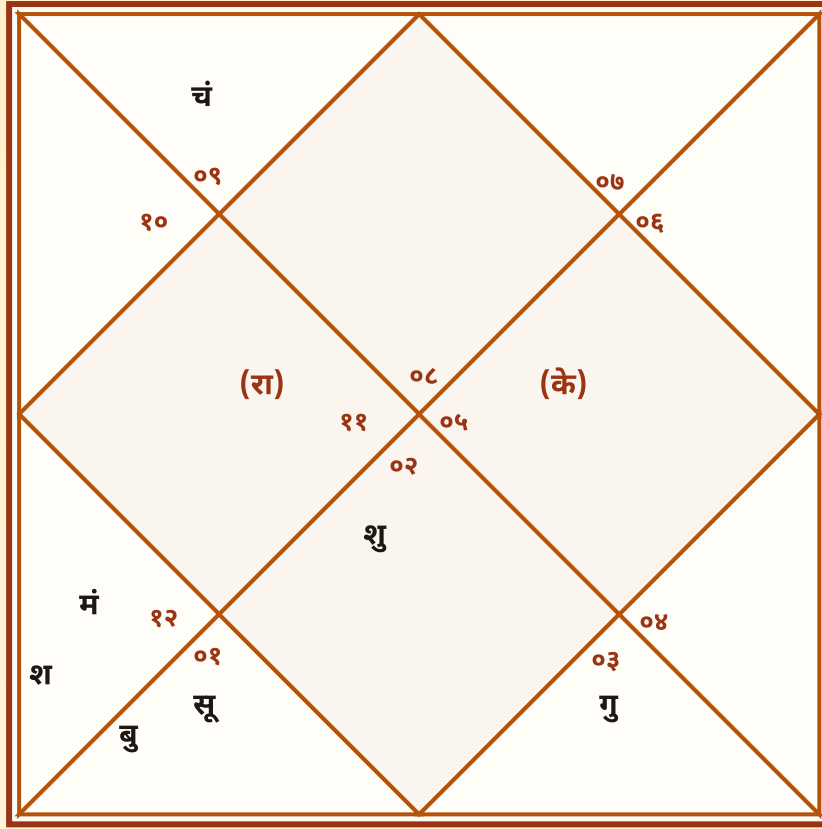


श्री गणेशाय नमः

पञ्चाङ्ग

विक्रम संवत्	२०८३	शक संवत्	१९४८
मास	ज्येष्ठ	पक्ष	कृष्ण
तिथि	पञ्चमी	तिथि-अन्त	10:14
वार	गुरुवार	नक्षत्र	पूर्वाषाढा
नक्षत्र-अन्त	18:46	योग	साध्य
योग-अन्त	01:59 अगले दिन	करण	तैत्ति
करण-अन्त	10:14	सूर्योदय	05:26
सूर्यास्त	18:56	दिनमान	३३ घटि ४३ पल
रात्रिमान	२६ घटि १७ पल	अहोरात्र	६० घटि
तारीख	७	महीना	मई
सन्	२०२६		
विवाह-स्थान	श्रीनगरगढ़वाल		
लग्न	वृश्चिक	घड़ी	19:26-21:26
त्रिबल	वर-सूर्य पूज्य · भाव ९ · कन्या-गुरु श्रेष्ठ · भाव ५ · वर-चन्द्र श्रेष्ठ · कन्या-चन्द्र श्रेष्ठ		
महापात	स्पर्श नहीं		

विवाह-लग्न कुण्डली



यह शुभ लग्न जामित्र, भृगुषट्क, कुजाष्टम, पाप-कर्तरी, अष्टम लग्न, चन्द्र-दोष, लत्ता और महापात से मुक्त है। स्थिर लग्न है, जो सर्वमङ्गलकारी होगा। श्रीमान् हरिदत्त और श्रीमती पार्वतीदेवी के पुत्र चिरंजीव वर का श्रीमान् गोपालदत्त और श्रीमती लक्ष्मीदेवी की पुत्री कुमारी वधू से विवाह श्रीनगरगढ़वाल के मण्डप में गुरुवार वार, मिति ७ मई, विक्रम संवत् २०८३, अंग्रेजी तारीख ७ महीना मई सन् २०२६, घड़ी 19:26–21:26, लग्न वृश्चिक पर होगा। शुभ हो।

हलदी · बान-तेल · रात्रिजागरण

वर की हलदी कन्या की हलदी

वर का बान-तेल कन्या का बान-तेल

रात्रिजागरण

कुटुम्ब

तथा श्रीमान् तथा श्रीमती

तथा श्रीमान् तथा श्रीमती

तथा श्रीमान् तथा श्रीमती

॥ शुभं भवतु ॥ · तन्त्रकुलम् · दृक् · लाहिरी

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ



॥ जन्म-पत्र · वर ॥

श्री श्रीमान् हरिदत्त के सुपुत्र, माता श्रीमती श्रीमती पार्वतीदेवी की गोद के रत्न, वर का शुभ जन्म श्रीनगरगढ़वाल में १५ जनवरी १९९० सोमवार सुबह ०८:१५ बजे हुआ। माघ कृष्ण चतुर्थी · नक्षत्र पूर्व फाल्गुनी चरण २ · योग सौभाग्य · करण बालव · लग्न मकर · चन्द्र-राशि सिंह।

नाम	पिता
वर	श्रीमान् हरिदत्त
माता	जन्म-स्थान
श्रीमती पार्वतीदेवी	श्रीनगरगढ़वाल
स्थिति	तिथि
अक्षांश 30.2247° · रेखांश 78.7850°	१५ जनवरी १९९० · सोमवार
समय	संवत्सर
सुबह ०८:१५	स्वभानु
मास	नक्षत्र
माघ · कृष्ण · चतुर्थी	पूर्व फाल्गुनी · चरण २
योग · करण	लग्न
सौभाग्य · बालव	मकर
चन्द्र-राशि	
सिंह	

॥ जन्म-पत्र · वधू ॥

श्री श्रीमान् गोपालदत्त के सुपुत्री, माता श्रीमती श्रीमती लक्ष्मीदेवी की गोद के रत्न, वधू का शुभ जन्म श्रीनगरगढ़वाल में ११ मार्च १९९४ शुक्रवार सुबह १०:३० बजे हुआ। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी · नक्षत्र शतभिषा चरण ३ · योग साध्य · करण शकुनि · लग्न वृषभ · चन्द्र-राशि कुम्भ।

नाम	पिता
वधू	श्रीमान् गोपालदत्त
माता	जन्म-स्थान
श्रीमती लक्ष्मीदेवी	श्रीनगरगढ़वाल
स्थिति	तिथि
अक्षांश 30.2247° · रेखांश 78.7850°	११ मार्च १९९४ · शुक्रवार
समय	संवत्सर
सुबह १०:३०	सर्वजित्
मास	नक्षत्र
फाल्गुन · कृष्ण · चतुर्दशी	शतभिषा · चरण ३
योग · करण	लग्न
साध्य · शकुनि	वृषभ
चन्द्र-राशि	
कुम्भ	

॥ विवाह-स्थान ॥

विवाह-मुहूर्त इसी स्थान के उदय और दृक् पञ्चाङ्ग से निकला।

स्थान	स्थिति
श्रीनगरगढ़वाल	अक्षांश 30.2247° · रेखांश 78.7850°
प्रमाण	गणित
स्थान-कोष से	दृक् · लाहिरी
प्रमाणित	

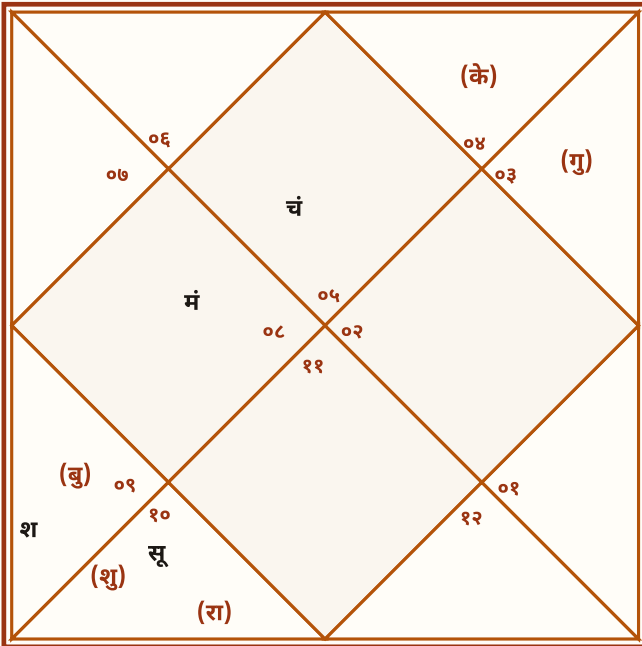
अष्टकूट · शुभ · 21/३६

वर · 1990-01-15 · श्रीनगरगढ़वाल · वधू · 1994-03-11 · श्रीनगरगढ़वाल

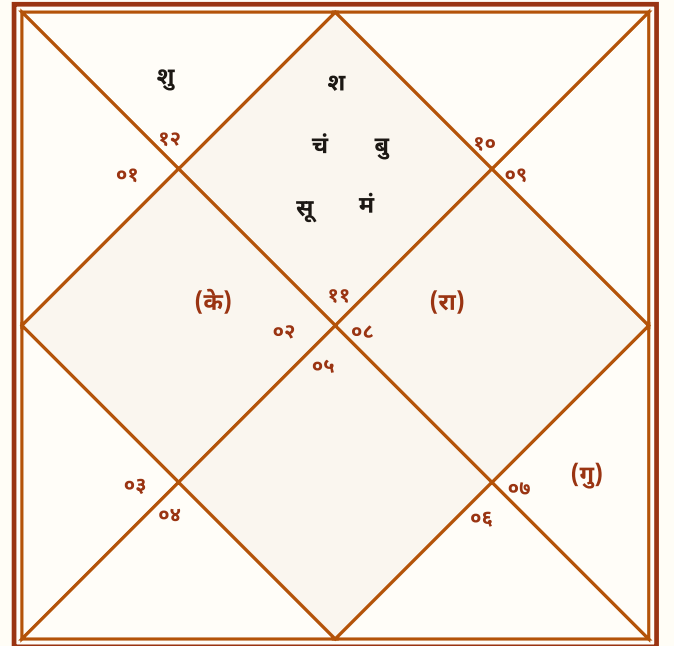
कूट	वर	वधू	गुण	फल
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1/1	वधू-राशि-वर्ण वर के बराबर या निम्न होना चाहिए।
वश्य	सिंह	कुम्भ	0/2	बारह राशियों की मुद्रित वश्य-सारणी — कौन किसके अनुकूल।
तारा	प्रत्यरि	साधक	1.5/3	जन्म-नक्षत्र से दोनों ओर। विपत्, प्रत्यरि, वध अशुभ।
योनि	मूषक	अश्व	2/4	चौदह पशु-योनि; सम ४, मित्र ३, शत्रु ०।
ग्रह मैत्री	सूर्य	शनि	0.5/5	दो चन्द्र-राशिनार्थों की नैसर्गिक मैत्री।
गण	मनुष्य	राक्षस	1/6	देव-मनुष्य ग्राह्य; देव-राक्षस कठोर युग्म।
भकूट	सिंह	कुम्भ	7/7	सप्तम — सामान्यतः सुखद।
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8/8	भिन्न नाड़ी: ८। एक नाड़ी: ०। मध्य-मध्य कठोरतम (मु.चि. ३४)।

अष्टकूट चन्द्र-कुण्डली से। ऊपर-मध्य = चन्द्र-राशि; अङ्क राशि हैं।

वर · चन्द्र-कुण्डली



वधू · चन्द्र-कुण्डली



माङ्गलिक विचार · दोष नहीं

माङ्गलिक दोष वर-वधू किसी में नहीं।

वर · आंशिक · प्रभावी नहीं

लग्न से भाव 11 · — · राशि वृश्चिक · नक्षत्र ज्येष्ठा

लग्न नहीं · भाव 11 · चन्द्र हाँ · भाव 4 · शुक्र नहीं · भाव 11

मङ्गल स्वराशि / उच्च — अपनी राशि नहीं काटता

वधू · मध्यम · प्रभावी नहीं

लग्न से भाव 10 · — · राशि कुम्भ · नक्षत्र शतभिषा

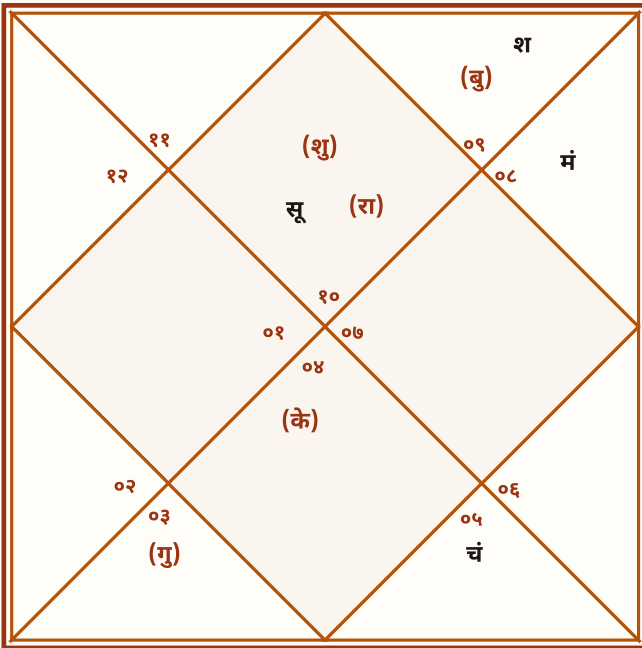
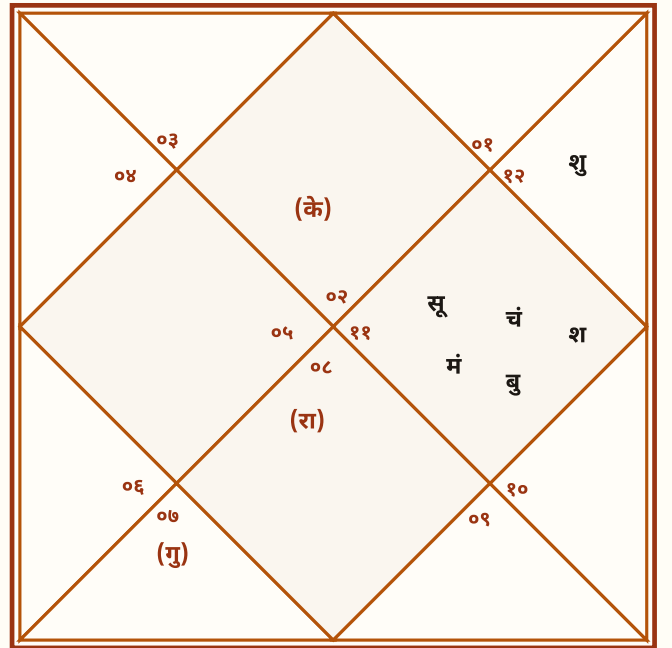
लग्न नहीं · भाव 10 · चन्द्र हाँ · भाव 1 · शुक्र हाँ · भाव 12

गुरु दृष्टि/युति — शुभदृग्योग; मुहूर्तदीपक «न मङ्गली पश्यति यस्य जीवा» · बलवान चन्द्र दृष्टि/युति मङ्गल पर

पाप-साम्य · वर 24.8 · वधू 19.4 · कन्या ≤ वर

लग्न-कुण्डली · माङ्गलिक इन्हीं भावों से

ऊपर-मध्य = जन्म-लग्न (भाव १)। अङ्क राशि हैं, भाव नहीं। माङ्गलिक पाठ इन्हीं घरों से मिलता है।

वर · लग्न-कुण्डली**वधू · लग्न-कुण्डली**

विस्तार · लग्न वाले दिन · 2

दिन	वार	नक्षत्र	तिथि	बन्ध	विवाह- लग्न	टिप्पणी
2026- 05-07	गुरुवार	पूर्वाषाढ़ा	पञ्चमी	सावधान	वृश्चिक 19:26– 21:26	शुभ सौर मास — मेष/वृष/मिथुन/वृश्चिक/मकर/कुम्भ चातुर्मास नहीं ज्येष्ठ — नारद-वसिष्ठ मुख्य मास। वर और वधू दोनों अपने घर के ज्येष्ठ सन्तान हों तो त्रिज्येष्ठ दोष — विवाह न करें। एक ही पक्ष ज्येष्ठ हो तो चल सकता है। शुभ तिथि — द्वितीया तृतीया पंचमी सप्तमी दशमी एकादशी त्रयोदशी वार शुद्ध — सोम बुध गुरु शुक्र पूर्वाषाढ़ा 18:46 तक विवाह-सूची में नहीं — वह काल त्याज्य। अन्त के बाद उत्तराषाढ़ा शुभ — उसी दिन काम हो सकता है। योग शुद्ध करण शुद्ध भूलोक-भद्रा नहीं महापात-स्पर्श नहीं अष्टकूट 21/३६ — दिन-चयन से अलग; जोड़ा जन्म-चन्द्र से सूर्य वर मेष भाव 9 (पूज्य) · गुरु कन्या मिथुन भाव 5 (श्रेष्ठ) · चन्द्र वर 5 श्रेष्ठ · कन्या 11 श्रेष्ठ शुद्ध लग्न — वृश्चिक 19:26–21:26 गोधूली आपत्काल — अन्य शुद्ध लग्न अभाव में ही; स्वेच्छा नहीं जन्म-नक्षत्र पर गोचर-लत्ता नहीं
2026- 05-29	शुक्रवार	स्वाती	त्रयोदशी	सावधान	मिथुन 06:44– 08:14	शुभ सौर मास — मेष/वृष/मिथुन/वृश्चिक/मकर/कुम्भ चातुर्मास नहीं ज्येष्ठ — नारद-वसिष्ठ मुख्य मास। वर और वधू दोनों अपने घर के ज्येष्ठ सन्तान हों तो त्रिज्येष्ठ दोष — विवाह न करें। एक ही पक्ष ज्येष्ठ हो तो चल सकता है। शुभ तिथि — द्वितीया तृतीया पंचमी सप्तमी दशमी एकादशी त्रयोदशी वार शुद्ध — सोम बुध गुरु शुक्र स्वाती 10:38 तक शुभ। अन्त के बाद विशाखा विवाह-सूची में नहीं — उसके बाद न लें। योग शुद्ध करण शुद्ध भूलोक-भद्रा नहीं महापात-स्पर्श नहीं अष्टकूट 21/३६ — दिन-चयन से अलग; जोड़ा जन्म-चन्द्र से सूर्य वर वृष भाव 10 (श्रेष्ठ) · गुरु कन्या मिथुन भाव 5 (श्रेष्ठ) · चन्द्र वर 3 श्रेष्ठ · कन्या 9 श्रेष्ठ शुद्ध लग्न — मिथुन 06:44–08:14

गोधूलि आपत्काल — अन्य शुद्ध लग्न अभाव में ही; स्वेच्छा नहीं
जन्म-नक्षत्र पर गोचर-लत्ता नहीं

सावधान

दिन	वार	नक्षत्र	तिथि	बन्ध	विवाह-लग्न	टिप्पणी
2026-04-26	रविवार	मघा	दशमी	सावधान	तुला 18:25-19:13 · गोधूलि	शुभ सौर मास — मेष/वृष/मिथुन/वृश्चिक/मकर/कुम्भ चातुर्मास नहीं मुख्य मास — माघ फाल्गुन वैशाख ज्येष्ठ (नारद, वसिष्ठ) शुभ तिथि — द्वितीया तृतीया पंचमी सप्तमी दशमी एकादशी त्रयोदशी आज रविवारवार है। विवाह के उत्तम वार सोम, बुध, गुरु और शुक हैं। रवि-शनि तभी जब शेष अङ्ग पूर्ण शुद्ध हों और आचार्य शान्ति दें। मघा 20:27 तक शुभ। अन्त के बाद पूर्व फाल्गुनी विवाह-सूची में नहीं — उसके बाद न लें। मघा शुभ है, पर पहला चरण (पाद) वर्ज्य। लग्न में द्वितीय से चतुर्थ चरण लें। योग शुद्ध करण शुद्ध भूलोक-भद्रा नहीं महापात-स्पर्श नहीं अष्टकूट 21/३६ — दिन-चयन से अलग; जोड़ा जन्म-चन्द्र से सूर्य वर मेष भाव 9 (पूज्य) · गुरु कन्या मिथुन भाव 5 (श्रेष्ठ) · चन्द्र वर 1 श्रेष्ठ · कन्या 7 श्रेष्ठ शुद्ध लग्न नहीं — सावधान: तुला 18:25-19:13 (लग्नेश 8 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं) गोधूलि आपत्काल — शुद्ध लग्न नहीं; स्वेच्छा नहीं जन्म-नक्षत्र पर गोचर-लत्ता नहीं
2026-04-27	सोमवार	पूर्व फाल्गुनी	एकादशी	सावधान	तुला 18:25-19:13 · गोधूलि	शुभ सौर मास — मेष/वृष/मिथुन/वृश्चिक/मकर/कुम्भ चातुर्मास नहीं मुख्य मास — माघ फाल्गुन वैशाख ज्येष्ठ (नारद, वसिष्ठ) शुभ तिथि — द्वितीया तृतीया पंचमी सप्तमी दशमी एकादशी त्रयोदशी वार शुद्ध — सोम बुध गुरु शुक पूर्व फाल्गुनी 21:18 तक विवाह-सूची में नहीं — वह काल त्याज्य। अन्त के बाद उत्तर फाल्गुनी शुभ — उसी दिन काम हो सकता है। योग ध्रुव 21:35 तक शुद्ध। अन्त के बाद व्याघात क्रूर — उसके बाद न लें। करण वणिज 06:08 तक शुद्ध। अन्त के बाद विष्टि त्याज्य — उसके बाद न लें। भूलोक-भद्रा नहीं महापात-स्पर्श नहीं अष्टकूट 21/३६ — दिन-चयन से अलग; जोड़ा जन्म-चन्द्र से

दिन	वार	नक्षत्र	तिथि	बन्ध	विवाह- लग्न	टिप्पणी
						सूर्य वर मेष भाव 9 (पूज्य) · गुरु कन्या मिथुन भाव 5 (श्रेष्ठ) · चन्द्र वर 1 श्रेष्ठ · कन्या 7 श्रेष्ठ शुद्ध लग्न नहीं — सावधान: तुला 18:25-19:13 (लग्नेश 8 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं) गोधूली आपत्काल — शुद्ध लग्न नहीं; स्वेच्छा नहीं जन्म-नक्षत्र पर गोचर-लत्ता नहीं
2026-05-01	शुक्रवार	स्वाती	पूर्णिमा	सावधान	मेष 05:32-06:02 · लत्ता · मिथुन 08:31-10:01 · लत्ता · कर्क 10:31-12:31 · मकर 00:31-01:31 · लत्ता · मेष 05:01-05:31	शुभ सौर मास — मेष/वृष/मिथुन/वृश्चिक/मकर/कुम्भ चातुर्मास नहीं मुख्य मास — माघ फाल्गुन वैशाख ज्येष्ठ (नारद, वसिष्ठ) आज पूर्णिमा है। मुख्य शुभ तिथियाँ द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी हैं। अन्य अङ्ग शुद्ध हों तो विचार करें। वार शुद्ध — सोम बुध गुरु शुक्र शुभ विवाह-नक्षत्र — स्वाती योग शुद्ध विष्टि 10:00 तक त्याज्य। अन्त के बाद बव शुद्ध — शेष दिन काम हो सकता है। भूलोक-भद्रा नहीं महापात-स्पर्श नहीं अष्टकूट 21/३६ — दिन-चयन से अलग; जोड़ा जन्म-चन्द्र से सूर्य वर मेष भाव 9 (पूज्य) · गुरु कन्या मिथुन भाव 5 (श्रेष्ठ) · चन्द्र वर 3 श्रेष्ठ · कन्या 9 श्रेष्ठ शुद्ध लग्न नहीं — सावधान: मेष 05:32-06:02 (लग्नेश 12 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं) · मिथुन 08:31-10:01 (लग्नेश 11 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं) · कर्क 10:31-12:31 (चतुर्थ चन्द्र) · मकर 00:31-01:31 (लग्नेश 3 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं) · मेष 05:01-05:31 (लग्नेश 12 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं) गोधूली आपत्काल — अन्य शुद्ध लग्न अभाव में ही; स्वेच्छा नहीं जन्म-नक्षत्र पर गोचर-लत्ता नहीं
2026-05-28	गुरुवार	चित्रा	द्वादशी	सावधान	वृश्चिक 18:45-19:33 · गोधूली	शुभ सौर मास — मेष/वृष/मिथुन/वृश्चिक/मकर/कुम्भ चातुर्मास नहीं ज्येष्ठ — नारद-वसिष्ठ मुख्य मास। वर और वधू दोनों अपने घर के ज्येष्ठ सन्तान हों तो त्रिज्येष्ठ दोष — विवाह न करें। एक ही पक्ष ज्येष्ठ हो तो चल सकता है। यह तिथि मुख्य शुभ-सूची (द्वितीया-तृतीया-पंचमी-सप्तमी-दशमी-एकादशी-त्रयोदशी) में नहीं। वार शुद्ध — सोम बुध गुरु शुक्र चित्रा 08:08 तक विवाह-सूची में नहीं — वह काल त्याज्य। अन्त के बाद स्वाती शुभ — उसी दिन काम हो सकता है।

दिन	वार	नक्षत्र	तिथि	बन्ध	विवाह- लग्न	टिप्पणी
						योग शुद्ध करण शुद्ध भूलोक-भद्रा नहीं महापात-स्पर्श नहीं अष्टकूट 21/३६ — दिन-चयन से अलग; जोड़ा जन्म-चन्द्र से सूर्य वर वृषभ भाव 10 (श्रेष्ठ) · गुरु कन्या मिथुन भाव 5 (श्रेष्ठ) · चन्द्र वर 3 श्रेष्ठ · कन्या 9 श्रेष्ठ शुद्ध लग्न नहीं — सावधान: वृश्चिक 18:45-19:33 (सप्तम बुध — अपत्य-बाधा (सावधान)) गोधूली आपत्काल — शुद्ध लग्न नहीं; स्वेच्छा नहीं जन्म-नक्षत्र पर गोचर-लत्ता नहीं
2026-06-11	गुरुवार	रेवती	एकादशी	सावधान	वृश्चिक 18:52-19:40 · गोधूली	शुभ सौर मास — मेष/वृष/मिथुन/वृश्चिक/मकर/कुम्भ चातुर्मास नहीं आषाढ़ मुख्य मास (माघ फाल्गुन वैशाख ज्येष्ठ) में नहीं, न मध्यम मार्गशीर्ष-कार्तिक। शुभ तिथि — द्वितीया तृतीया पंचमी सप्तमी दशमी एकादशी त्रयोदशी वार शुद्ध — सोम बुध गुरु शुक्र रेवती 08:16 तक शुभ। अन्त के बाद अश्विनी विवाह-सूची में नहीं — उसके बाद न लें। रेवती शुभ है, पर अन्तिम चरण वर्ज्य। लग्न में प्रथम से तृतीय चरण लें। योग शुद्ध करण शुद्ध भूलोक-भद्रा नहीं महापात-स्पर्श नहीं भसन्धि रेवती ४ सर्वार्थसिद्धि अष्टकूट 21/३६ — दिन-चयन से अलग; जोड़ा जन्म-चन्द्र से सूर्य वर वृषभ भाव 10 (श्रेष्ठ) · गुरु कन्या कर्क भाव 6 (पूज्य) · चन्द्र वर 9 श्रेष्ठ · कन्या 3 श्रेष्ठ शुद्ध लग्न नहीं — सावधान: वृश्चिक 18:52-19:40 (लग्नेश 6 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं) गोधूली आपत्काल — शुद्ध लग्न नहीं; स्वेच्छा नहीं जन्म-नक्षत्र पर गोचर-लत्ता नहीं
2026-06-25	गुरुवार	स्वाती	एकादशी	सावधान	मिथुन 05:14-06:44 · मकर 20:44-	शुभ सौर मास — मेष/वृष/मिथुन/वृश्चिक/मकर/कुम्भ चातुर्मास नहीं ज्येष्ठ — नारद-वसिष्ठ मुख्य मास। वर और वधू दोनों अपने घर के ज्येष्ठ सन्तान हों तो त्रिज्येष्ठ दोष — विवाह न करें। एक ही पक्ष ज्येष्ठ हो तो चल सकता है।

दिन	वार	नक्षत्र	तिथि	बन्ध	विवाह- लग्न	टिप्पणी
					22:14 · मिथुन 04:45- 05:15 · लत्ता	शुभ तिथि — द्वितीया तृतीया पंचमी सप्तमी दशमी एकादशी त्रयोदशी वार शुद्ध — सोम बुध गुरु शुक्र स्वाती 16:29 तक शुभ। अन्त के बाद विशाखा विवाह-सूची में नहीं — उसके बाद न लें। योग शुद्ध करण वणिज 07:08 तक शुद्ध। अन्त के बाद विष्टि त्याज्य — उसके बाद न लें। भूलोक-भद्रा नहीं महापात-स्पर्श नहीं अष्टकूट 21/३६ — दिन-चयन से अलग; जोड़ा जन्म-चन्द्र से सूर्य वर मिथुन भाव 11 (श्रेष्ठ) · गुरु कन्या कर्क भाव 6 (पूज्य) · चन्द्र वर 3 श्रेष्ठ · कन्या 9 श्रेष्ठ शुद्ध लग्न नहीं — सावधान: मिथुन 05:14-06:44 (लग्नेश 2 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं) · मकर 20:44-22:14 (सप्तम बुध — अपत्य-बाधा (सावधान)) · मिथुन 04:45-05:15 (लग्नेश 2 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं) गोधूली आपत्काल — अन्य शुद्ध लग्न अभाव में ही; स्वेच्छा नहीं जन्म-नक्षत्र पर गोचर-लत्ता नहीं
2026- 06-26	शुक्रवार	विशाखा	द्वादशी	सावधान	मिथुन 05:15- 06:45 · मकर 20:45- 21:45 · मिथुन 04:45- 05:15 · लत्ता	शुभ सौर मास — मेष/वृष/मिथुन/वृश्चिक/मकर/कुम्भ चातुर्मास नहीं ज्येष्ठ — नारद-वसिष्ठ मुख्य मास। वर और वधू दोनों अपने घर के ज्येष्ठ सन्तान हों तो त्रिज्येष्ठ दोष — विवाह न करें। एक ही पक्ष ज्येष्ठ हो तो चल सकता है। यह तिथि मुख्य शुभ-सूची (द्वितीया-तृतीया-पंचमी-सप्तमी-दशमी-एकादशी-त्रयोदशी) में नहीं। वार शुद्ध — सोम बुध गुरु शुक्र विशाखा 19:16 तक विवाह-सूची में नहीं — वह काल त्याज्य। अन्त के बाद अनुराधा शुभ — उसी दिन काम हो सकता है। योग शुद्ध करण शुद्ध भूलोक-भद्रा नहीं महापात-स्पर्श नहीं अष्टकूट 21/३६ — दिन-चयन से अलग; जोड़ा जन्म-चन्द्र से सूर्य वर मिथुन भाव 11 (श्रेष्ठ) · गुरु कन्या कर्क भाव 6 (पूज्य) · चन्द्र वर 3 श्रेष्ठ · कन्या 9 श्रेष्ठ शुद्ध लग्न नहीं — सावधान: मिथुन 05:15-06:45 (लग्नेश 2 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं) · मकर 20:45-21:45 (सप्तम बुध — अपत्य-बाधा (सावधान)) · मिथुन 04:45-05:15 (लग्नेश 2 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं) गोधूली आपत्काल — अन्य शुद्ध लग्न अभाव में ही; स्वेच्छा नहीं

दिन	वार	नक्षत्र	तिथि	बन्ध	विवाह-लग्न	टिप्पणी
						जन्म-नक्षत्र पर गोचर-लत्ता नहीं
2026-06-29	सोमवार	मूल	पूर्णिमा	सावधान	मिथुन	शुभ सौर मास — मेष/वृष/मिथुन/वृश्चिक/मकर/कुम्भ
					05:16–	चातुर्मास नहीं
					06:16 · मिथुन	ज्येष्ठ — नारद-वसिष्ठ मुख्य मास। वर और वधू दोनों अपने घर के ज्येष्ठ सन्तान हों तो त्रिज्येष्ठ दोष — विवाह न करें। एक ही पक्ष ज्येष्ठ हो तो चल सकता है।
					04:46–	
					05:16 · लत्ता	आज पूर्णिमा है। मुख्य शुभ तिथियाँ द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी हैं। अन्य अङ्ग शुद्ध हों तो विचार करें।
						वार शुद्ध — सोम बुध गुरु शुक्र
						मूल शुभ है, पर पहला चरण (पाद) वर्ज्य। लग्न में द्वितीय से चतुर्थ चरण लें।
						योग शुद्ध
						विष्टि 16:17 तक त्याज्य। अन्त के बाद बव शुद्ध — शेष दिन काम हो सकता है।
						भूलोक-भद्रा नहीं
						महापात-स्पर्श नहीं
						गण्डान्त मूल १
						अष्टकूट 21/३६ — दिन-चयन से अलग; जोड़ा जन्म-चन्द्र से सूर्य वर मिथुन भाव 11 (श्रेष्ठ) · गुरु कन्या कर्क भाव 6 (पूज्य) · चन्द्र वर 5 श्रेष्ठ · कन्या 11 श्रेष्ठ
						शुद्ध लग्न नहीं — सावधान: मिथुन 05:16–06:16 (लग्नेश 2 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं) · मिथुन 04:46–05:16 (लग्नेश 2 भाव — केन्द्र-त्रिकोण नहीं)
						गोधूलि आपत्काल — अन्य शुद्ध लग्न अभाव में ही; स्वेच्छा नहीं
						जन्म-नक्षत्र पर गोचर-लत्ता नहीं

विवाह-विधि:

नाड़ी दोष। अष्टकूट में नाड़ी-कूट को आठ गुण दिए गए हैं और उसे सर्व-शिरोमणि प्रधान माना गया है। सत्ताईस नक्षत्र तीन नाड़ियों में बँटे हैं — आदि (वात), मध्य (पित्त), अन्त्य (कफ)। आदि — अश्विनी · रोहिणी · पुनर्वसु · मघा · हस्त · विशाखा · मूल · श्रवण · पूर्व भाद्रपद। मध्य — भरणी · मृगशिरा · पुष्य · पूर्व फाल्गुनी · चित्रा · अनुराधा · पूर्वाषाढ़ा · धनिष्ठा · उत्तर भाद्रपद। अन्त्य — कृत्तिका · आर्द्रा · आश्लेषा · उत्तर फाल्गुनी · स्वाती · ज्येष्ठा · उत्तराषाढ़ा · शतभिषा · रेवती। वर और वधू की नाड़ी एक हो तो नाड़ी दोष कहा जाता है। आदि-एक में स्त्री-पीड़ा, रोग या वियोग की आशंका कही गई है; मध्य-एक में वर के प्राण या असाध्य रोग का भय; अन्त्य-एक में रोग, घोर दुःख, वैधव्य और अपत्य-बाधा। यह विचार जन्म-चन्द्र से होता है।

नाड़ी-परिहार। ज्योतिर्निबन्ध — ऋक्षैक्ये राशिभेदे च राश्यैक्ये ऋक्षभिन्नके । नाडीदोषो न विद्यते तथा गणकृतो रणः॥ अर्थात् एक नक्षत्र और भिन्न राशि, अथवा एक राशि और भिन्न नक्षत्र — दोष नहीं। नक्षत्र-राशि दोनों एक हों और केवल चरण / नवमांश भिन्न हों, तो पराशर-मत से मृत्युदायक नहीं माना जाता; पाद ज्ञात हुए बिना यह परिहार नहीं बाँधा जाता।

नाड़ी-अपवाद। ज्योतिश्चिन्तामणि — रोहिण्याद्रामृगेन्द्राग्निपुष्यश्रवणपौष्णभम् । अहिर्बुध्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते ॥ अर्थ: रोहिणी, आर्द्रा, मघा (मृगेन्द्र), कृत्तिका (अग्नि), पुष्य, श्रवण, रेवती (पौष्ण), उत्तर भाद्रपद (अहिर्बुध्य)। नारदसंहिता में एकनाड़ी-अपवाद — रोहिणी, आर्द्रा, मघा, पुष्य, विशाखा, श्रवण, भरणी, उत्तर भाद्रपद। दोनों ग्रन्थ-सूचियाँ भिन्न हैं; पत्र का अष्टकूट-मिलान नारदसंहिता से चलता है।

त्रिबल शुद्धि। पञ्चाङ्ग-शुद्धि सामान्य काल है; त्रिबल वर-वधू की जन्म-राशि से गोचर सूर्य-चन्द्र-गुरु का व्यक्तिगत परीक्षण है। अशुद्ध त्रिबल पर पञ्चाङ्ग शुद्ध होने पर भी विवाह नहीं। **वर के सूर्य।** जन्म-राशि से ३, ६, १०, ११ श्रेष्ठ; १, २, ५, ७, ९ पूज्य — लाल पूजा करके ग्राह्य; ४, ८, १२ नेष्ट। कुछ मत सूर्य उच्च मेष, स्वराशि सिंह या वर्गोत्तम हो तो अष्टम-द्वादश का परिहार कहते हैं। **कन्या के गुरु।** २, ५, ७, ९, ११ श्रेष्ठ; १, ३, ६, १० पूज्य — पीली पूजा; ४, ८, १२ नेष्ट। **दोनों के चन्द्र।** १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११ श्रेष्ठ; ४, ८, १२ नेष्ट — शान्ति नहीं, मुहूर्त टालें। कुछ आचार्य द्वादश चन्द्र वर के लिए आंशिक ग्राह्य कहते हैं, कन्या के लिए निषिद्ध।

पूज्य-शान्ति। पूज्य श्रेष्ठ और नेष्ट के बीच है। बिना पूजा वह दिन शुद्ध नहीं; पूजा के बाद सावधान-ग्राह्य। नेष्ट पर यह पूजा नहीं चलती। **लाल पूजा** — वर के सूर्य पूज्य हों तो सूर्य की पूजा लाल पुष्प, लाल वस्त्र, रक्तचन्दन या कुङ्कुम और गुड़ से; रविवार अथवा विवाह से पूर्व। इसके बाद वह सूर्य ग्राह्य माना जाता है। **पीली पूजा** — कन्या के गुरु पूज्य हों तो गुरु की पूजा पीत पुष्प, पीत वस्त्र, हरिद्रा, चने या पीले अक्षत से; गुरुवार अथवा विवाह से पूर्व।

गुरु-शुक्र अस्त · सिंहस्थ · त्रिज्येष्ठ। गुरु या शुक्र अस्त हों तो माङ्गलिक कर्म वर्जित — पत्र की बाधित-सूची पहले से दिखाती है। सिंहस्थ गुरु में विवाह वर्जित; देश-नवांश पक्ष धर्मसिन्धु से। त्रिज्येष्ठ — ज्येष्ठ मास में वर और वधू दोनों घर के ज्येष्ठ हों तो विवाह नहीं; एक ही पक्ष ज्येष्ठ हो तो दोष नहीं।

एकविंशति महादोष · लग्न। दिन शुद्ध होने पर भी लग्न-दोष मुहूर्त को दूषित करते हैं। जामित्र — लग्न से सप्तम में सूर्य, मङ्गल, शनि, राहु, केतु न हों; नक्षत्र से चौदहवाँ ग्रह भी जामित्र है; पूर्ण चन्द्र या बलवान गुरु सप्तम में दोष भङ्ग करते हैं। भृगुषट्क — लग्न से षष्ठ में शुक्र नहीं। कुजाष्टम — लग्न से अष्टम में मङ्गल नहीं। कर्तरी — लग्न के द्वितीय और द्वादश में पापग्रह नहीं। षष्ठाष्टक-रिपु चन्द्र — लग्न से ६, ८, १२ में चन्द्र नहीं। सग्रह चन्द्र — चन्द्र-पाप युति नहीं। अष्टम लग्न — वर या वधू की जन्म-राशि / जन्म-लग्न से आठवाँ उदय नहीं। बाणपञ्चक — सूर्य-अंश से बाण; मृत्यु-बाण वर्जित। ग्रहणोत्पात — ग्रहण-नक्षत्र छह मास त्याज्य। लग्न-शुद्धि में गोचर-लत्ता लग्न-नक्षत्र तथा वर-वधू जन्म-नक्षत्र पर नापी जाती है। प्रहार हो तो वह लग्न शुद्ध नहीं — सावधान। दिन त्याज्य नहीं होता।

विवाह-लग्न। स्थिर राशि प्रधान — वृषभ, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ। द्विस्वभाव — मिथुन, कन्या, धनु, मीन — भी शुभ। चर — मेष, कर्क, तुला, मकर — स्थिरता न्यून; तुला को कुछ आचार्य ग्राह्य कहते हैं। लग्नेश केन्द्र (१, ४, ७, १०) या त्रिकोण

(५, ९) में बलवान हो; अस्त, नीच, शत्रु-राशि में नहीं।

गोधूलि। अन्य शुद्ध लग्न न मिले तभी आपत्काल में। सूर्यास्त के आसपास दिन-रात्रि संधि। स्वेच्छा से नहीं लिया जाता। तब भी जन्म से अष्टम लग्न और पाप-कर्तरी न हों।

माङ्गलिक विचारः

उद्भव। वराह-कल्प में पृथ्वी-पुत्र भौम / कुज कहा गया। अन्य आख्यान शिव-भृकुटी-स्वेद से मङ्गल की उत्पत्ति कहते हैं। उग्र ब्रह्मचारी ग्रह का दांपत्य-भावों में बैठना वैवाहिक बाधा का मूल माना गया।

शास्त्र। बृहत्पाराशर होरा शास्त्र · स्त्रीजातक · लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे चाऽष्टमे कुजे । शुभदृग्योगहीने च पतिं हन्ति न संशयः॥ अर्थः लग्न, व्यय, सुख, सप्तम या अष्टम में मङ्गल हो और शुभ दृष्टि-युति न हो तो पति-मारक कहा गया। जो योग स्त्री में वैधव्य कहता है, वही पुरुष में विधुरता। आज «मृत्यु» अधिकतर वैवाहिक-विच्छेद और घोर क्लेश के अर्थ में देखा जाता है। उत्तर-पद्धति १ ४ ७ ८ १२। दक्षिण / देवकेरलम् / अगस्त्य / मानसागरी द्वितीय भी लेते हैं — धने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे । कन्या भर्तुर्विनाशाय भर्तुश्च स्त्रीविनाशनम्॥

तीन संदर्भ। लग्न — देह-बाह्य जीवन। चन्द्र — मन-संवेग। शुक्र — दांपत्य-शय्या। एक से आंशिक, दो से मध्यम, तीनों से पूर्ण। लगभग अधिकतर कुण्डलियों में कोई न कोई अंश रहता है — इसलिए भङ्ग आवश्यक।

भाव-भेद। लग्न अन्तर्ध्व — वर्चस्व, दृष्टि ४ ७ ८ पर। द्वितीय चतुष्पथ — वाणी-कुटुम्ब; दक्षिण-पक्ष। चतुर्थ धनुर् — गृह-सुख, सप्तम पर दृष्टि। सप्तम विडाल — साक्षाद्विवाह, सबसे प्रबल। अष्टम उग्रदन्त — माङ्गल्य-आयु। द्वादश कोष्ठक — शय्या-व्यय, सप्तम पर दृष्टि। नाग — लग्न/सप्तम में आश्लेषा मघा रेवती। वक्र — दबे क्रोध की तीव्रता; कुछ मत वक्र से दोष घटते हैं, विडाल-उग्रदन्त में नहीं।

भङ्ग। सम-दोष — कुजदोषवती देया कुजदोषवते किल । नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥ शुभदृग्योग — पराशर «शुभदृग्योगहीने»; मुहूर्तदीपक — न मङ्गली पश्यति यस्य जीवा। स्व/उच्च, द्वितीय बुध-राशि, चतुर्थ मेष-वृश्चिक, सप्तम कर्क-मकर, अष्टम गुरु-राशि, द्वादश शुक्र-राशि। सिंह-कुम्भ लग्न दोष नहीं; कर्क लग्न पर योगकारक से तीव्रता नगण्य। लोह लोहं — दूसरे पत्र के उन्हीं भावों में शनि-सूर्य-राहु-केतु। शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत् । तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्॥

पाप-साम्य। अष्टकूट अनुकूलता; पाप-साम्य आयु-स्थिरता। पाप — मङ्गल शनि सूर्य राहु केतु। भाव-भार १/२/४=३, सप्तम=५, अष्टम=६, द्वादश=१। ग्रह-भार कुज ४ शनि ३ रवि २ राहु-केतु १। उच्च ० स्व १/२ मित्र ३/४ नीच ५/४। लग्न पूर्ण, चन्द्र आधा, शुक्र पाद। कन्या-सूचकांक वर से अधिक न हो। डॉ. बी. वी. रमन की ३३७.५० इकाई अलग पैमाना है — पत्र अपना भार-योग दिखाता है, वह अंक नहीं थोपता।

शान्ति। ग्रह कर्म-रेखा है, शाप नहीं। भङ्ग न हो तब — कुम्भ-विवाह (कन्या, कलश-सप्तपदी के बाद विसर्जन); अर्क/मदार-विवाह (वर); पीपल-शालिग्राम भी प्रचलित। मङ्गलागौरी व्रत — श्रावण मङ्गलवार, १६ दीप-सामग्री। उज्जैन मङ्गलनाथ भात-पूजा · अङ्गारक होम। वैदिक — ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपां रेतांसि जिन्वति॥ बीज — ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः — जप के बाद दशांश खदिर-हवन। अष्टमस्थ पर रुद्राभिषेक · महामृत्युञ्जय।

॥ श्री तन्त्रकुलज्योतिषम् ॥ · तन्त्रकुलम् · दृक् · लाहिरी